स्थित नहीं हैं, वे जीव के शरीर में होने वाले विकारों का अनुभव नहीं कर सकते। इस संदर्भ में **योगिनः** शब्द आशयपूर्ण है। आजकल बहुत से नाममात्र के योगी और योगसंघ हो गए हैं। पर वास्तव में स्वरूप-साक्षात्कार के सम्बन्ध में वे एकदम अन्धे हैं। वे केवल शारीरिक व्यायाम ही करना जानते हैं और बस इतना चाहते हैं कि शरीर सुडौल और स्वस्थ रहे। इसके अतिरिक्त कोई जानकारी उन्हें नहीं होती। यहाँ ऐसे ही मनुष्यों **यतन्तोऽप्यकृतात्मानः** कहा है। वे नामभर की योगपद्धति का अभ्यास करते हैं, पर स्वरूप-साक्षात्कार नहीं कर पाते। अतः उन्हें जीवात्मा के देहान्तर का बोध नहीं हो सकता। जो सच्चे योगी हैं और आत्मस्वरूप, संसार और श्रीभगवान् के तत्त्व को जानते हैं, अर्थात् जो कृष्णभावनाभावित शुद्धभक्तियोगी हैं केवल वे ही यह जान सकते हैं कि सब कुछ किस प्रकार हो रहा है।

यदादित्यगतं तेजो जगद्भासयतेऽखिलम्।
यच्चन्द्रमसि यच्चाग्नौ तत्तेजो विद्धि मामकम्।।१२।।

यत्=जो; **आदित्यगतम्**=सूर्य में स्थित; **तेजः**=तेज (है); **जगत्**=जगत् को; **भासयते**=उद्भासित करता है; **अखिलम्**=सम्पूर्ण; **यत्**=जो; **चन्द्रमसि**=चन्द्रमा में (है); **यत्**=जो; **च**=तथा; **अग्नौ**=अग्नि में (है); **तत्**=उस; **तेजः**=तेज को; **विद्धि**=जान; **मामकम्**=मेरा।

अनुवाद

जो तेज सूर्य में स्थित होकर सम्पूर्ण जगत् को प्रकाशित करता है, जो चन्द्रमा में है और जो अग्नि में है, उसको तू मेरा ही तेज जान।।१२।।

तात्पर्य

अज्ञानी यह नहीं समझ सकते कि सब कुछ किस प्रकार हो रहा है। यदि श्रीभगवान् के इस वर्णन को समझ लिया जाय तो ज्ञान में प्रवेश हो सकता है। सूर्य, चन्द्रमा, अग्नि और बिजली को सब देखते हैं। केवल इतना ही जानना पर्याप्त है कि जो तेज सूर्य में है, जो चन्द्रमा में तथा अग्नि और बिजली में भी है, वह सब भगवान् श्रीकृष्ण से आ रहा है। इस प्रकार जीवन में कृष्णभावना का सूत्रपात होने पर बद्धजीव प्राकृत-जगत् में महान् प्रगति कर सकता है। जीव मूलरूप में श्रीकृष्ण के भिन्न-अंश हैं। इसलिए यहाँ श्रीकृष्ण उन्हें ऐसा संकेत कर रहे हैं, जिससे वे अपने घर—भगवद्धाम को लौट आएँ। सूर्य सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को उद्भासित कर रहा है। नाना प्रकार के बहुत से ब्रह्माण्ड और सौरमण्डल हैं, जिनमें अनेक सूर्य, चन्द्रमा, आदि लोक हैं। इस सूर्य-प्रकाश का स्रोत श्रीभगवान् की ब्रह्मज्योति ही है। सूर्योदय के साथ मनुष्य का दैनन्दिन क्रिया-कलाप आरम्भ होता है। इसी प्रकार, अग्नि भी बड़ी उपयोगी है। उसके तेज से भोजन बनाया जाता है तथा नाना प्रकार का निर्माण कार्य चलता है। सूर्य, अग्नि और चन्द्रमा का तेज मनुष्यमात्र को प्रिय है। इनके बिना कोई भी जीव जीवनधारण नहीं कर सकता। अतः यदि जीव समझ जाय